P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-6, ISSUE-4, May-2018
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

भक्ति रसायन में भक्ति रस विमर्श

सारांश

मधुसूदन सरस्वती ने भक्ति को रसायन अर्थात् औषधि माना है! उनका भक्तिरूप औषधि केवल किसी रोग विशेष का नहीं अपितु समस्त रोगों के हेतु जन्म–मरण से मुक्त करती है। जिसके बाद रोगो से पुनरू पीडित होने की सम्भावना भी समाप्त हो जाती है। इससे ब्रह्मानन्द रूप तंदुरूस्ती प्राप्त होता है। भगवत्साक्षात्कार ही प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रयोजन है। भक्ति रसायन में १४७ कारिका हैं तथा तीन उल्लासों में यह विभक्त है! समस्त ग्रंथ पद्यात्मक है।

मुख्य शब्दः चित्तद्रुति, स्नेह जन्मभक्ति, अलौकिकता, स्थायीभाव।

जयप्रकाश नारायण
एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
जामिया मिल्लिया इस्लामिया,
नई दिल्ली, भारत

प्रस्तावना

लोक एवं काव्य में श्रस' शब्द बहुत ही महत्वपूर्ण है। लोक में षड् रस का विवेचन मिलता है, मधुर, तिक्त, लवण कटु कषाय तथा क्षार। ये सभी रस प्रिय ही नहीं होते। नाट्य में आठ रस तथा काव्य में नव रस की चर्चा आती है।[1]

शृङ्गारहास्यकरुणरौद्रवीरभयानकाः।
वीभत्साद्भुतसंज्ञौ चेत्यष्टौ नाट्ये रसाः स्मृताः।
निर्वेदस्थायिभावोऽस्ति शान्तोऽपि नवमो रसः।[2]

इसके अतिरिक्त देवतादि विषयक रस भाव अथवा भक्ति कही जाती है।

भक्ति रस का विवेचन हमें अनेक काव्यों में प्राप्त होता है। ''मुरारि पद चिन्ता चेत्तदा माघे रतिं कुरु'' अर्थात् श्रीकृष्ण की भक्ति करनी हो तो माघ काव्य शिशुपाल वध का परायण करें। माघ के शिशुपाल वध में 175 बार श्री कृष्ण के पर्याय का प्रयोग हुआ है। अतः यदि एक बार भी सम्पूर्ण शिशुपाल वध महाकाव्य का परायण किया जाय तो श्री कृष्ण नामोच्चारण से स्वतः ही उनकी भक्ति हो जाती है। इसी प्रकार दशावतारचरित में विष्णु के दश अवतारों का विस्तृत विवेचन प्राप्त होते हैं।

मत्स्यः कुर्मो वराहः पुरुषहरिवपुर्वामनो जामदग्न्यः।
कार्कुत्स्थः कंसहन्ता स च सुगतमुनिः कर्किनामा च विष्णुः।।[3]

अतः इस महाकाव्य के परायण से विष्णु की भक्ति स्वतः ही हो जाती है। इस तरह के अनेक काव्य संस्कृत में उपलब्ध होते हैं जहाँ भक्ति रस का साङ्गोपाङ्ग वर्णन मिलता है।

भक्ति रसयान नामक काव्य शास्त्रीय ग्रन्थ यतिवर मधुसूदन सरस्वती विरचित एक अनुपम कृति है जिसमें इन्होंने भक्ति को ही सभी रसों में एवं सर्व श्रेष्ठ सिद्ध कर अन्य रसों का समयोजन भक्ति में कर देते हैं। काव्यशास्त्र में भक्ति रस को सभी रसों में उत्कृष्ट स्थान पर अभिशिक्त करने वाली कृतियों में भक्ति रसायन का महत्वपूर्ण स्थान है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य यतिवर मधुसूदन सरस्वती विरचित भक्तिरसायन में वर्णित भक्ति एवं भक्तिरस का सम्पूर्ण विवेचन प्रस्तुत करना है।

मधुसूदन सरस्वती ने भक्ति को रसायन अर्थात् औषधि माना है। परन्तु उन्होंने भक्ति रूप औषधि तथा भक्तिभिन्न औषधि में अन्तर भी स्पष्ट कर दिया है। भक्ति रूप औषधि किसी रोग विशेष का नहीं अपितु समस्त रोगों के हेतु – जन्म–मरण से मुक्त करती है, जिसके बाद रोगों से पुनः पीड़ित होने की सम्भावना भी समाप्त हो जाती है। इससे ब्रह्मानन्द रूप तन्दुरुस्ती प्राप्त होती है। जो अन्य औषधियों से कदापि सम्भव नहीं है। इसकी प्राप्ति में किसी प्रकार की आर्थिक व्यय भी नहीं होता है और न ही वैद्य की खोज में भटकने की आवश्यकता है। इस प्रकार प्रकृत ग्रन्थ के नाम से ही ज्ञात हो जाता है कि इस

ग्रन्थ का अधिकारी वही हो सकता है जो इस संसार रूपी रोग से छुटकारा पाना चाहता है। भक्ति रूप रसायन का विवेचन ही इसका विषय है जिसके बाद रोगों से पीड़ित होने की सम्भावना भी समाप्त हो जाती है। भगवत्साक्षात्कार ही इसका प्रयोजन है।[4]

संसाररोगेण बलीयसा चिरं निपीड़ितेस्तत्प्रशमेऽतिशिक्षितम।
इदं भवद्भिर्बहुधा व्ययातिगं निपीयतां भक्तिरसायनं बुधाः।।[5]

इस प्रकार स्पष्ट है कि ग्रन्थकर्ता ने प्रकृत ग्रन्थ का नामकरण ग्रन्थ विषयक अनुबन्ध चतुष्टय एवं विवेच्य विषय के आधार पर किया है।

प्रकृत ग्रन्थ का प्रतिपाद्य विषय भक्ति है। ब्रह्मविद्या से परमपुरुषार्थ मोक्ष की प्राप्ति के समान केवल भक्ति से भी परमेश्वर के परम प्रेम की प्राप्ति रूप पुरुषार्थ की सिद्धि होती है। प्रकृत ग्रन्थ तीन उल्लासों में विभक्त किया गया है। प्रथम उल्लास का समायोजन भक्ति में कर देते है। काव्यशास्त्र में भक्ति रस को सभी रसों में उत्कृष्ट स्थान पर अभिशक्त करने वाली कृतियों में भक्ति रसायन का महत्वपूर्ण स्थान है।

मधुसूदन सरस्वती ने भक्ति को रसायन अर्थात् औषधि माना है। परन्तु उन्होंने भक्ति रूप औषधि तथा भक्ति भिन्न औषधि में अन्तर भी स्पष्ट कर दिया है। भक्ति रूप औषधि किसी रोग विशेष का नहीं अपितु समस्त रोगों के हेतु जन्म–मरण से मुक्त करती है। जिसके बाद रोगों से पुनः पीड़ित होने की सम्भावना भी समाप्त हो जाती है। इससे ब्रह्मानन्द रूप तन्दुरुस्ती प्राप्त होती है। जो अन्य औषधियों से कदापि सम्भव नहीं है। इसकी प्राप्ति में किसी प्रकार की आर्थिक व्यय भी नहीं होता है और न ही वैद्य की खोज में भटकने की आवश्यकता है। इस प्रकार प्रकृत ग्रन्थ के नाम से ही ज्ञात हो जाता है कि इस ग्रन्थ का अधिकारी वही हो सकता है जो इस संसार रूपी रोग से छुटकारा पाना चाहता है। भक्ति रूप रसायन का विवेचन ही इसका विषय है जिसके बाद रोगों से पीड़ित होने की सम्भावना भी समाप्त हो जाती है। भगवत्साक्षात्कार ही इसका प्रयोजन है।[6]

इस प्रकार स्पष्ट है कि ग्रन्थकर्ता ने प्रकृत ग्रन्थ का नामकरण ग्रन्थ विषयक अनुबन्ध चतुष्टय एवं विवेच्य विषय के आधार पर किया है।

प्रकृत ग्रन्थ का प्रतिपाद्य विषय भक्ति है। ब्रह्मविद्या से परमपुरुषार्थ मोक्ष की प्राप्ति के समान केवल भक्ति से भी परमेश्वर के परम प्रेम की प्राप्ति रूप पुरुषार्थ की सिद्धि होती है। प्रकृत ग्रन्थ तीन उल्लासों में विभक्त किया गया है। प्रथम उल्लास का नाम भक्ति सामान्य निरूपण, द्वितीय उल्लास में भक्ति विशेष का विवेचन तथा तृतीय उल्लास में भक्ति का सर्वोत्कृष्ट रस रूप में स्थापित किया गया है।

इस ग्रन्थ में मधुसूदन सरस्वती से बतलाया है कि भक्ति मात्र ही वह औषधि है जिससे संसार रूपी रोग अर्थात् जन्म–मरण तथा इसके परिणामस्वरूप विविध रोग जिससे संसार आपकी उत्पत्तिकाल से ही परिव्याप्त है, उन्मुक्त हुआ जा सकता है। इसे औषधि के सेवन से न केवल इन रोगों से मुक्ति मिलती है अपितु इन रोगों के पुनः कभी होने की सम्भावना भी समाप्त हो जाती है। एलोपैथिक, होम्योपैथिक, आयुर्वेद आदि औषधियों के सेवन से रोग से मुक्ति मिल सकती है परन्तु उसके बाद तन्दुरुस्ति के लिए अन्य औषधि या विशिष्ट खाद्य पदार्थ का सेवन करना पड़ता है, किन्तु भक्ति रूपी औषधि के पान से संसार रोग से मुक्ति तथा चिर स्थायी आनन्द दोनों साथ–साथ प्राप्त हो जाते हैं। भक्ति वह मधुर रस है जिसके आस्वादन हो जाने पर जीव उसमें निमग्न हो जाता है तथा उसे क्षण मात्र के लिए भी उसी प्रकार नहीं छोड़ना चाहता है जिस प्रकार मछली क्षणमात्र के लिए भी जल से दूर नहीं रहना चाहती। यही कारण है कि मधुसूदन सरस्वती ने भक्ति को भक्ति रसायन कहा तथा प्रस्तुत ग्रन्थ का नाम श्रीमद्भागवद् भक्ति रसायन रखा।

भक्ति लक्षण

मधुसूदन सरस्वती के अनुसार भगवद् धर्म से द्रवी भूत हुए चित्त को सर्वेश्वर भगवान के विषय में धारावाहिक हुई वृत्ति भक्ति कही जाती है –

द्रुतस्य भगवदधर्माद्धारावहिकतां गता।
सर्वेशे मनसो वृतिर्भक्तिरित्यभिधीयते।।[7]

चित्त की भगवदाकार होना ही भक्ति है। चित्त की भगवदकारता में कारण है–

भगवद्धर्म अर्थात् भगवान् के गुणादि का कीर्तनादि। भगवान के गुणादि के श्रवणादि से चित्त द्रवित होता है। ऐसे चित्त का विषय भगवान् होते हैं। फलतः द्रवित चित्त भगवान् की ओर धारावाहिक हो जाती है। जब चित्त भगवान् की ओर उन्मुख होता है तब उसमें भगवद्ाकारतः होती है। यही भगवदाकारता भक्ति है। भगवद् गुण श्रवणादि धर्मबुद्धिपूर्वक तथा धर्माभिन्न बुद्धिपूर्वक तथा द्वेष ईर्ष्या आदि से भी सम्भव है। भगवद्भक्त प्रह्लाद आदि का भगवद्गुण श्रवणादि धर्मबुद्धिपूर्वक था तथा शिशुपालादि का भगवद् गुण श्रवणादि द्वेषबुद्धि पूर्वक था। क्योंकि वे भगवान के उत्कर्ष को सहन नहीं कर सकता था। चित्र की द्रवता के विषय में मधुसूदन जी कहते हैं –

चित्तद्रव्यं हि जतुवत् स्वभावात् कठिनात्मकम।
तापकैर्विषययोगे द्रवत्वं प्रतिपद्यते।[8]

चित्त नामक द्रव जतु (लाक्षा) के समान स्वभाव से ही कठोर होता है। किन्तु तापक विषयों के संयोग से वह चित्त की पूर्ण द्रवता के लिए भगवद् विषयक रामादि तापकों की आवश्यकता होती है।

चित्तद्रावक तापक का लक्षण –
कामक्रोध भय स्नेह हर्ष शोक दयाऽऽदयः।
तापकाश्चित्त जतुमस्तच्छान्तौ कठिनवस्तु तत।[9]

काम क्रोध भय स्नेह, हर्ष शोक दया आदि लाक्षा सदृश चित्त के तापक हैं। (तापकों) के शान्त होने पर वह चित्त (पुनः) कठोर हो जाता है।

भक्ति के भेद

भक्ति रसायन के भक्ति में नौ (9) भेद बतलाये गये हैं।

1. कामजन्य भक्ति

कामः शरीर सम्बन्धविशेषः स्पृह्यालुता।
सन्निधानसन्निधान भेदेन स भवेद द्विधा।।[10]

2. क्रोधजन्य भक्ति

3. भयजन्म भक्ति
4. स्नेहजन्य भक्ति
5. हर्षजन्य भक्ति
6. शोकजन्य भक्ति
7. दयाजन्य भक्ति
8. दयोत्साह भक्ति
9. धर्मोत्साह भक्ति

रस के प्रकार –

भक्ति रसायन में रस के चार प्रकार बतलाये गये हैं।[11]

1. केवल संकीर्ण रस – रौद्र, भयानक, धर्मवीर, दानवीर, वीभत्स, शान्त।
2. संकीर्ण मिश्रित – शृङ्गार, करुण, हास्य।
3. केवल मिश्रित –आलम्बन भगवन होते हैं
4. शुद्ध रस – भगवद् विषयक

रस

रस की परिभाषा देते हुए मधुसूदन सरस्वती कहते हैं –

साऽनन्तरक्षणेऽवश्यं व्यनक्ति सुखमुत्तमम।
तद् रसः केदिदाचार्यास्तामेव तु रसं विदुः।।[12]

वह (मनोवृत्ति) तत्क्षण में निश्चित रूप से एक उत्तमोत्तम सुख को अभिव्यक्त करती है तथा वही रस है। कुछ आचार्य उस (मनोवृत्ति) को ही रस कहते हैं।

भक्त के भेद

मधुसूदन सरस्वती ने भक्त के तीन भेद बतलाये हैं –

1. श्रेष्ठ भगवद् भक्त – जिसका चित्त पूर्ण द्रवित हो जाता है। द्रवित चित्त भगवदाकारता को प्राप्त कर लेता है वह भक्त समस्त प्राणियों को देखते समय उन्हें भी भगवद् ही देखते हैं।
2. मध्य भक्त –जब चित्त ईषद्द्रवावस्था (शिथिलावस्था) में होता है तब उसमें पूर्ण भगवदाकारता प्रविष्ट नहीं होता है। उसमें भगवदाकारता का वासनामय होता है। ऐसे भक्त को मध्यम भक्त कहा गया है। भविष्य में चित्त पूर्ण द्रवित होने की सम्भावना रहती है।
3. प्राकृत भगवद्भक्त – जिसके चित्त में द्रवावस्था न तो पुष्ट हुई है और न ही उत्पन्न हुई है फिर भी वह उसके लिए प्रयत्न करता है। भगवद् धर्मों का श्रद्धा से अनुष्ठान करता है। ऐसा भक्त प्राकृत भक्त कहलाता है। प्राकृत भक्त चित्त की ठोसावस्था को द्रवावस्था में परिणत करने की ओर प्रवृत्त रहता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भक्ति रसायन में मधुसूदन सरस्वती ने भक्ति रस का विस्तृत विवेचन कर सभी रसों में श्रेष्ठ प्रतिपादित किया है। मानव को मानसिक सुख प्रदान करते हुए भक्ति मुक्ति के मार्ग पर प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष

परमात्मा से साक्षात्कार का मार्ग भक्ति है। गोस्वामी तुलसीदास ने भी नवधा भक्ति की बात बतायी है। प्रायः प्रत्येक अध्यात्म मार्ग में भक्ति को ईश्वर प्राप्ति का सहज मार्ग बताया गया है। भक्ति रसायन में मधुसूदन सरस्वती ने इसी भाव का विवेचन कर मानव को भक्ति मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित किया है। उनके अनुसार भक्ति औषधि सदृश जीवनाधायक तत्व है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

भक्तिरसायन, मधुसूदन सरस्वती व्याख्याकार डॉ. अजय कुमार झा , हेमाद्रि प्रकाशन,दिल्ली २०१२.

रति भक्ति, कपिल कपूर डी. के. प्रिन्टवर्ल्ड प्राइवेट लिमिटेड ,नई दिल्ली २०११.

भक्ति का विकाश मुंशीराम शर्मा चौखम्बा संस्कृत सीरीज वाराणसी १९७४.

भक्तिरसामृतसिन्धु, रुपगोस्वामी, अच्युतग्रन्थ माला, वि. स., १९८८.

संस्कृत साहित्यशास्त्र में भक्ति रस, दीपा अग्रवाल, ईस्टन बुक लिंकर्स,दिल्ली,१९९६.

पाद टिप्पणी

1. *नाट्यशास्त्र, 6/16।*
2. *काव्यप्रकाश, 4/29, 4/46।*
3. *दशावतारचरितम,1/2 (उत्तरार्ध)।*
4. *भक्तिरसायन, 1/2।*
5. *काव्यप्रकाशः, 4/47।*
6. *भक्तिरसायन, 1/2।*
7. *भक्तिरसायन, 1/3।*
8. *भक्तिरसायन, 1/4।*
9. *भक्तिरसायन, 1/5।*
10. *भक्तिरसायन, 2/3।*
11. *भक्तिरसायन, 2/37–40।*
12. *भक्तिरसायन, 3/13।*